14 / 01 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

ब्राह्मण सो देवता जीवन में पवित्रता की अनुभूति

➢➢ ब्राह्मण जीवन में पवित्रता

➳ _ ➳ मैं परम पवित्र ब्राह्मण आत्मा हूं

→ पवित्रता का श्रेष्ठ खजाना मुझे इस जन्म में परमात्मा से मिला है

→ विश्व परिवर्तन का आधार यह पवित्रता ही है

→ पवित्रता ही इस भारत भूमि की महानता है

→ मुझ ब्राह्मण आत्मा को पवित्रता का श्रेष्ठ भाग्य इस जीवन में प्राप्त हुआ है

■ मैं ब्राह्मण सदैव आत्मिक स्थिति में स्थित रह सर्व को आत्मा भाई भाई देखती हूं

■ मेरी मनसा संपूर्ण पवित्र है

■ मेरी वाणी मे सदा सत्यता और मधुरता है

■ कर्म करते मैं आत्मा सदैव नम्रता और संतुष्टता का गुण धारण कर सदैव हर्षितमुख रहती हूं

➢➢ अनादि स्वरूप में पवित्रता की अनुभूति

➳ _ ➳ स्वयं को एक चमकते सितारे के रूप में मैं आत्मा परमधाम में देख रही हूं

→ परमधाम परम पवित्र धाम है

→ परमधाम मुझ आत्मा का घर है

→ इस पवित्र धाम से ही मै आत्मा इस धरा पर पाट बजाने आती हूं

→ मैं आत्मा परमधाम में अपने अनादि पवित्र स्वरूप में स्थित हूं

■ परम ज्योति बिंदु शिव बाबा मेरे सम्मुख हैं

■ शिव बाबा पवित्रता के सागर हैं

■ बाबा की संपूर्ण पवित्र किरणे मुझ आत्मा में समा रही हैं

■ मैं परम पवित्र ज्योतिपुंज हूं

➢➢ आदि पवित्र देव स्वरूप की अनुभूति

➳ _ ➳ इस पवित्र स्थिति में मैं आत्मा इस धरा पर अवतरित होती हूं

→ अपने आदि पवित्र देव स्वरूप में मैं आत्मा प्रवेश करती हूं

→ मस्तक पर तेज है

→ डबल ताजधारी मैं देवात्मा इस पवित्र बैकुंठ धाम में हूं

→ पवित्र देवी देवताओं का यह पवित्र सतयुग है

■ हर आत्मा सतो प्रधान है

■ यहां चारों और पवित्रता सुख और शांति है

■ संपूर्ण प्रकृति और पांचो तत्व पवित्र सतो प्रधान है